8. गुप्त साम्राज्य

- गुप्त वंश का संस्थापक श्रीगुप्त था।

चन्द्रगुप्त प्रथम (319 - 335 ई.)

- चन्द्रगुप्त प्रथम ने ही गुप्तवंश को एक साम्राज्य की प्रतिष्ठा प्रदान की।
- चन्द्रगुप्त ने महाराजाधिराज का उपाधि ग्रहण किया।
- उसने एक नया संवत गुप्त संवत 319 AD में चलाया। गुप्त संवत् तथा शंक संवत् के बीच 241 वर्षो का अंतर होता है।

समुद्रगुप्त (335 - 375 ई)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त शासक बना।
- उसके काल में गुप्त साम्राज्य का विस्तार सबसे अधिक हुआ।
- विंसेंट स्मिथ ने समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा है।
- उसके सामरिक विजयों का विवरण हरिषेण प्रयाग प्रशस्ति से मिलता है।
- यह विजेता के साथ-साथ कवि संगीतज्ञ व विद्या का संरक्षक था।
- उसके सिक्कों पर उसे वीणा बजाते हुए चित्रित किया गया है।
- उसने कविराज की उपाधि प्रदान की गई है।
- इलाहाबाद के स्तम्भ लेख में समुद्र गुप्त की धर्म प्रचार बंधु उपाधि का उल्लेख मिलता है।
- समुद्रगुप्त ने महान बौद्ध भिक्षु वसुबन्धु को संरक्षण दिया था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय (380 - 412 ई.)

- गुप्त वंश में सर्वप्रथम रजत (चांदी) मुद्राओं का प्रचलन चन्द्रगुप्त द्वितीय ने प्रचलन करवाया था।
- इसके दिग्विजयों का उल्लेख उसके उदयगिरि गुहालेख से होता है।
- उसके समय में पाटलिपुत्र व उज्जैयिनि विद्या के प्रमुख केन्द्र थे।
- उसका दूसरा राजधानी उज्जैयिनि भी थी।
- उसके शासन काल में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया तथा अपने यात्रा वृत्तांत में मध्य प्रदेश को ब्राह्मणों का देश कहा है।
- इसके काल में ब्राह्मण धर्म का चरमोत्कर्ष का काल था।

कुमार गुप्त महेन्द्रादित्य (415 - 454 ई)

- गुप्त वंश में सर्वाधिक अभिलेख कुमार गुप्त के मिलते है।
- उसके शासन काल में नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
- विलसड़ अभिलेख से ही कुमारगुप्त एक गुप्तों की वंशावली प्राप्त होती है।
- मध्यभारत में रजत सिक्कों का प्रचलन उसी के काल में हुआ।
- इसके सिक्के पर मयूर की आकृति अंकित है।
- इसने महेन्द्रादित्य, श्रीमहेन्द्र, तथा अश्वमेध महेन्द्र आदि उपाधियां धारण की।

स्कन्दगुप्त (455 - 467 ई.)

- इसी के शासन काल में हूणों का आक्रमण हुआ।
- इसने गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का पुनरूद्धार कराया जिसका निर्माण चन्द्रगुप्त मौर्य ने किया था।
- इसने अपनी राजधानी अयोध्या स्थानांतरित किया।